नव वर्ष की प्रथम प्रतिपदा

पं. अनन्त शर्मा

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा वर्ष प्रतिपदा कहलाती है। हमारे लिए यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण है केवल इसलिए नहीं कि नये वर्ष का आरंभ का प्रथम दिवस है, अपितु यह विश्व सृष्टि का प्रथम दिवस है। सृष्टि का यह प्रथम दिवस है, यह इसका सर्वोपरि महत्व काल-विज्ञान की दृष्टि में है। जो विश्व के किसी भी देश द्वारा आज तक नहीं जाना गया है, घोषित करना और मानना तो बहुत दूर है। आइये इस उपलक्ष में अपने काल ज्ञान सम्बन्धी कुछ बिन्दुओं को देखें।

हमारे वर्ष के अवयवों पर विचार करें तो हम दिन, पक्ष, मास, ऋतु और अयन ये पांच पड़ाव वर्षपूर्ति तक प्राप्त करते हैं। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक की काल की अवधि दिन कहलाती है। इस साधारण गणना के दिन का नाम 'सावन दिन' है। इस दिन के दो बरावर बराबर भाग हैं। सूर्य की स्थिति वाला भाग अहः कहलाता है, सूर्य की अवस्थिति से रहित भाग रात्रि कहलाता है इन दोनों का संयुक्त काल 'अहोरात्र' होता है।

पक्ष मास

पक्ष मास के घटक हैं। दो पक्षों का एकमास होता है। फलस्वरूप पक्ष स्वतः 15 दिन का हो जाता है। प्रथम पक्ष को शुक्ल तथा दूसरे पक्ष को कृष्ण कहते हैं। इस विभाजन का प्राकृतिक आधार चंद्रमा है। चंद्रमा का रूप बढता और घटता है। इसका अपनी 'पूर्ण' वृद्धि का दिन 'पूर्णिमा' कहलाता है। यह वृद्धि का अंतिम दिन है। इस प्रकार यह वृद्धिकाल प्रकाशमय होने से 'शुक्ल' कहलाता है। शुक्ल पक्ष की पूर्ति पर आने वाला प्रथम दिन ह्रास के आरम्भ का प्रथम दिन है। यह ह्रास भी 15 दिन चलता है। अंतिम दिन 'अमावस्या' है। इस दिन चंद्रमा तनिक भी नहीं दिखता है। उत्तरोत्तर अंधकार बढ़ाने वाले ये दिन 'कृष्ण' कहलाते हैं। अंधकार काला सा होता है अतः 15 दिन का पूरा रात्रिकाल कृष्ण होने से यह अवधि कृष्ण पक्ष कहलाती है। यही दोनों पक्ष मास के घटक हैं। चंद्रमा का एक अन्य नाम 'मास्' अर्थात 'पाः' है। 'मास्' द्वारा देखा गया यह काल है, इसी कारण से 'मास' कहलाता है। मास ही हिंदी और अन्य भाषाओं में 'माह' बोला जाता है।

मास ऋतु

मास अर्थात् माह और महिना ही ऋतु को जन्म देता है। दो दो मास की एक एक ऋतु होती है। इस प्रकार वर्ष में कुल छह ऋतुएं बनती हैं। प्रथम मास चैत्र है। यहां से मास गणना का आरम्भ

होता है। क्रमशः 1. चैत्र 2. वैशाख 3. ज्येष्ठ 4. आषाढ़ 5. श्रावण 6. भाद्रपद 7. आश्विन अथवा आश्वयुज 8. कार्तिक 9. मार्गशीर्ष अथवा अग्रहायण 10. पौष 11. माघ और 12. फाल्गुन मासों के नाम हैं। लोकभाषा में इनका रूप 1. चैत 2. बैसाख 3. जेठ 4. आषाढ 5. सावन 6. भादवा 7. आसोज 8. काती 9. मंगसर या अगहन 10. पौष 11. माघ तथा 12. फागण है।

इसी क्रम से दो-दो मास की एक एक ऋतु का क्रम है। चैत्र वैशाख की ऋतु बसंत। ज्येष्ठ आषाढ = ग्रीष्म, श्रावण भाद्रपद = वर्षा, आश्विन कार्तिक = शरत्, मार्गशीर्ष पौष = शिशिरतथा माघ और फाल्गुन = हेमंत हैं। वेदों में वसंत का नाम मधु तथा ग्रीष्म का नाम माधव भी है। इसी भांति इन सभी के अन्य अन्य कई नाम हैं। ये नाम ही लोकभाषाओं में अनेक विभिन्न रूपों में मिलते हैं जिससे ज्ञात होता है कि ये सभी लोक भाषाएं संस्कृतकी ही उपज हैं।

ऋतु-अयन

तीन तीन क्रमिक ऋतुओं से एक अयन बनता है अतः कुल दो अयन होते हैं। अयन शब्द के अनेक अर्थ हैं इनमें से एक है मार्ग। यह मार्ग सूर्य का ही है। देखते हैं कि सूर्य की गति पूर्व से पश्चिम की ओर है। यह भी स्पष्ट दिखता है कि एक समय सूर्य का झुकाव उत्तर की ओर से होता सा लगता है, एक वह समय होता है जब यह झुकाव दक्षिण की ओर लगता है, इस झुकाव से ही सूर्य की उत्तर की ओर होती गति 'उत्तरायण' है। यही गति दक्षिण की ओर से होती हुई 'दक्षिणायन' है। शब्द एक ही है अयन इसका न उत्तरायण में ण हो जाता है किसी निमित्त से, अतः उत्तर+अयन का रूप उसका रूप 'उत्तरायण' हो जाता है। दक्षिण+अयन में वह निमित्त नहीं होता है अतः यह 'दक्षिणायन' ही रहता है। यही स्थिति राम+अयन= 'रामायण' में तथा कृष्ण+अयन-कृष्णायन में है। अतः इनके उच्चारण तथा लेखन में इस नियम को ध्यान में रखना चाहिए जिससे त्रुटि से बचे रहें।

वर्ष

दो अयन का एक वर्ष होता है। उत्तरायण सूर्य का दिन है, दक्षिणायन सूर्य की रात्रि है। सूर्य ने जिस बिंदु से प्रस्थान किया था पुनः उसे उस बिंदु तक जाने में जो समय लगा है यह सूर्य का 'अहोरात्र है। सूर्य का यह अहोरात्र उसकी आकाशीय गति पर निर्भर करता है। द्यो अथवा द्युलोक में होने से दिव्य कहलाता है।

अब हम भली भांति समझ सकते हैं कि दिव्य अहोरात्र हमारे वर्ष का 360 गुना क्यों होता है। इस प्रकार हमारे 360 दिनों का वर्ष क्यों होता है यह समझ में आ जाता है।

सावन वर्ष

जैसा कि लेख के प्रारंभ में ही बताया गया है कि सूर्योदय से सूर्योदय की अवधि को जो हमारे

नित्य का अनुभव है उसे हम सावन अहोरात्र कहते हैं। अत्यंत संक्षेप में थोड़ा सा इस विषय को समझने की आवश्यकता है।

सूर्य से जुड़े इस अहोरात्र को सावन नाम सवन से दिया गया है। सवन किसी भी यज्ञ की क्रिया की पूर्णता का नाम है। एकाह (एक दिन का) यज्ञ, द्वयह (दो दिवसीय) यज्ञ, इस प्रकार नाना प्रकार के सभी यज्ञों की गणना सवन से होने से इस दिन को सवन नाम दिया गया है। सवन से साध्य, सवन से सम्बन्धित, यह 'सावन' का अर्थ हैं।

ऐसे तीस सावन दिनों की समष्टि सावन मास है। सावन मास की 12 (बारह) आवृत्तियां सावन वर्ष है। आगे की गणना इन सावन वर्षों से होती है अतः इस इकाई को व्यवहार के लिए ग्रहण किया गया है ।जब 'सावन वर्ष' कहा जाता है तो स्पष्ट है कि ऐसे भी अन्य दिन और वर्ष हैं यह ज्योतिष का विषय है किंतु हमारे व्यवहार में ना आने से इस समय इसकी चर्चा को छोड़ते हैं। समझने के लिए चांद्र दिन मास और वर्ष का थोड़ा सा परिचय उचित है।

चांद्र वर्ष

इन ग्रहों-सूर्य, चंद्र, भौम (=मंगल), बुध, गुरु, शुक्र, शनि और पृथ्वी का नक्षत्रों की दृष्टि से परिक्रमण व्याप्ति तथा परिक्रमण का मार्ग एक सा ही है, इस मार्ग को नक्षत्र पथ कहते हैं। ये नक्षत्र 27 हैं। नक्षत्रों के इस पथ पर सभी की भिन्न भिन्न गति है। चंद्र एक दिन में एक नक्षत्र पार कर लेता है। यह चंद्र का एक दिन है। पूरे नक्षत्र क्रमण में 27 दिन लगे, यह चांद्र मास हो जाता है। ऐसे 12 चंद्र मास का वर्ष 'चांद्र वर्ष' कहलाता है। यह सामान्य स्थूलमान है। शुक्ल और कृष्ण पक्ष में हम इसे सदा देखते हैं। अतः यह उदाहरण रखा गया। इस प्रकार सौर, चांद्र, नाक्षत्र और सावन ये कुल 4 मार्ग भारतीय ज्योतिष व्यवहार में हैं।

भारतीय पञ्चाङ्ग में इन चारों तरह के दिन, मास, वर्ष का सामंजस्य कर वर्ष पत्रिका बनायी जाती है। सामंजस्य में तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण यह पांच अंग प्रमुख हैं, अतः इसका नाम पञ्चाङ्ग है। केवल चंद्र को आधार बनाकर वर्ष की गणना वाली मुस्लिम वर्ष पत्री में ऐसा सामंजस्य न होने से देखते हैं कि उनका पहिला माह 'मोहरम्म' ऋतुओं के साथ नहीं चलता है, कभी शीत में, कभी ग्रीष्म में कभी वर्षा में।

इसी भांति ईस्वी सन् को देखें । भूभ्रमण के आधार पर दिन रात्रि का समय मानकर वे 365 दिन का वर्ष मानते हैं, फरवरी के 28 दिन होते हैं प्रति 4 वर्ष बाद 29, इस प्रकार की उनकी गणना है। साधारणतया 365 दिन का वर्ष मानें तो हमारे एक युग में लगभग 600 वर्ष का अंतर हो जाता है। प्रारंभ में उनका वर्ष 10 माह का होता था नाम थे जनवरी, फेब्रुअरि, मार्च, एप्रिल, मे, जून, सैप्तम्बर,

ओक्टोबर, नवंबर, दिसंबर। सप्तम्बर में संस्कृत सप्त, ओक्टोबर में संस्कृत अष्ट, नवंबर में नव (नौ) तथा दिसंबर में दश की स्पष्ट प्रतीति होती है। पश्चात् जब जुलियस सीजर के समय में सुधार हुआ तो जुलाई उनके नाम पर तथा सैण्ट ओगोष्टस (संत अगस्त) के नाम पर ओगस्त नाम जोड़ दिए जून के पश्चात, अतः सैप्तम्बर सप्तम के स्थान पर नवम क्रम में पहुंच गया और इसी क्रम में आगे के मास चले, जिससे 10, 11, 12 वें क्रम की पूर्ति हुई। इस वर्ष परंपरा में बीते वर्षों की संख्या को क्रमिक गणनाक्रम ही बतावेगा, उनकी ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है कि समष्टि को इकाई के रूप में कोई नाम बतावे।

भारत में ऐसे नाम हैं जो युगों का नाम बताते हैं। सप्तर्षि युग, बार्हस्पत्य युग आदि, इन्हें सप्तर्षि संवत्, बृहस्पति संवत् आदि भी कहते हैं। इनसे बड़ा युग, युग नाम से ही व्यवहार में आता है। अब इसकी कुछ विशेष चर्चा करते हैं क्योंकि सृष्टि का इतिहास बताने के लिए जो बहुत बड़ी वर्ष गणना प्रयोग में आती है उस की सबसे छोटी इकाई यही है।

युग–मान

इस पवित्र संकल्प वाक्य के काल से संबंधित अंश सातवां अंश वाक्य की पूर्ति का है जो बताता है कि मैं इस दिन यह कार्य करने जा रहा हूँ।

ब्रह्मासर्वेश्वर विष्णु से प्रेरित हैं, इस समय जो कर्म में प्रवृत्त हैं। वें सातवें ब्रह्मा इससे गत ब्रह्माओं का बोध होता है, इस ब्रह्मा का पूर्व परार्ध 50 वर्ष बीत चुके हैं, वर्तमान नव वर्ष का यह श्वेतवाराह प्रथम दिन है, इस दिन के छह, मन्वन्तर निकल चुके हैं। सातवां मन्वन्तर चल रहा है। इस मन्वन्तर के 27 युग व्यतीत हो गए हैं। 28 वा युग चल रहा है, इस 28 वें प्रथम तीन पाद समाप्त हो गए हैं। यह कलियुग चल रहा है। यह हम हजारों वर्ष बोलते रहेंगे क्योंकि कलि 432000 (चार लाख बत्तीस हजार) वर्षों का है। अब हमें कलियुग का यह कौनसा वर्ष चल रहा है, इतना ही ध्यान रखना है।

स्थाई रूप में एक ही वर्ष की स्मृति रखनी पड़े अतः इस गत द्वापर तक कल्प निकालकर रख लेने चाहिये ये हैं 1972944000 (एक अरब सत्तानवे करोड़ उन्तीस लाख चम्मालीस हजार) वर्ष। व्यवहार में इन्हें कहेंगे कल्पादि द्वापरान्त वर्ष'। अर्थात् इस कल्प के आदि से लेकर इस गत द्वापर वर्ष तक के वर्ष।

अब कलि के आरंभ के दिन से अब तक गए वर्षों को जानने के लिए वर्तमान में चलने वाले शक संवत् में 3179 जोड़ देने चाहिये। प्राप्त योगफल गत कलि को बताता है। 1938 + 3178 = 5118 गतकलि के वर्ष प्राप्त होते हैं। इन्हें द्वापरान्त कलि वर्षों में जोड़ देने से कल्पादि से वर्तमान वर्ष

तक कुल वर्ष संख्या प्राप्त हो जाती है जो वर्तमान में व्यतीत कल्पाब्द है। यह इस समय तक (1972944000 + 5118 =) 1,97,29,49,118 होती है विश्व में कहीं भी ऐसे एक एक वर्ष तक का पूरा विवरण देने वाला कोई उपाय नहीं है, यह है संकल्प द्वारा विश्व सृष्टि का सही समय बताने का आधार वर्ष। यदि इस कल्पाब्द में से सृष्टि रचना में लगे वर्षों को घटा दिया जावे तो प्राप्त वर्ष 'सृष्टि संवत् के गत वर्ष' बन जाते हैं। यह हैं (1,97,29,49,118 - 1,70,640=) 1,97,27,78,408 वर्ष। अब से कुछ समय पूर्व तक पञ्चाङ्गों में यह दोनों कल्पाब्द और सृष्ट्यब्द दिये जाते रहे हैं।

नववर्ष प्रतिपदा को एक पवित्र पर्व के रूप में मनाने का सबसे बडा कारण इस वैज्ञानिक उपलब्धि को आम आदमी तक पहुंचाना है। यह समस्त विश्व के हित में है ।

सावन वर्षों की समष्टि की एक इकाई का नाम युग है। इस युग की ईकाई में 43,20,000 (तैतालीस लाख बीस हजार) वर्ष होते हैं। व्यवहार की सुविधा के लिए इसे 4 भागों में बांट दिया जाता है। यह समान संख्या के नहीं हैं। इन पादों के नाम क्रम से उनकी वर्ष संख्या के साथ यह हैं : 1. **सत्यपाद** = 17,28,000 (सत्रह लाख अठावीस हजार) वर्ष, 2. **वेता पाद** = 12,96,000 वर्ष, 3. **द्वापर पाद** = 8,64,000 वर्ष और 4. **कलि पाद** 4,32,000 वर्ष । युगांश होने से इन्हें युग नाम के साथ भी सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग कहते हैं। पादमान के समान होने की स्थिति में चतुर्थांश 10,80,000 होता, किंतु ऐसा नहीं है। इसका कारण है धर्म का ह्रास होने वाली समय की गणना भिन्नता के क्रम में प्रस्तुत करना।

पाद स्थिति काल

धर्म का स्वरूप उसकी स्थिति की दृढता और शिथिलता के अनुपात पर है। उसका आधार लोक द्वारा पालन किये जाने की दृढ़ पकड़ है। जैसे जैसे लोभ आदि दुर्भाव बढ़ते हैं, वैसे वैने लोगों की धर्म की पालना शिथिल होती जाती है। उससे धर्म की स्थिति भी कमजोर पड़ती जाती है। यही धर्म का ह्रास होना है। सृष्टि के आदि काल में धर्म का स्वरूप पूर्ण रहता है, यह पूर्णता ही धर्म की और लोकसमुदाय की 'सत्य' स्थिति है। अतः इस युग पाद का नाम सत्य है। कालांतर में जब 'सत्य' जनता की पकड़ से बिल्कुल निकलता जाता है तथा लोग कर्म के अनुष्ठान को ही धर्म मानकर कृत कृत्य होने लगते हैं, तो इस स्थिति का नाम 'त्रेता' हो जाता है।

त्रेता का अर्थ है त्रिक' - तीन की समष्टि को पूर्ण प्रधानता दे देना है, यह त्रिक् तीन अग्नियों पर आधारित है। सत्य से विचलित क्रियाकलाप ज्ञान के अभाव में प्राणहीन से हो जाते हैं, तो धीरे-धीरे विकृत होते जाते हैं तथा हाथ से निकलते जाते हैं। उस समय यह संशय अधिक गहरा होता जाता

है कि क्या करें और क्या न करें। इसका नाम है द्वापर। एक को छोड़कर दूसरे को पकड़ना अर्थात् ज्ञान को छोड़कर कर्म को पकड़ना, कर्म को छोड़कर ज्ञान को पकड़ना इस प्रकार, भक्ति जो साध्य है उसे भी साधन बना लेना, इस इसका अंत 'प्रलय' है। प्रकृष्ट - सर्वाधिक - लय प्रलय है। सृष्टि क्रमश: अपने मूल की ओर अपने एक एक घटक में प्रवेश करते हुए सर्वमूल- ब्रह्म-में लीन हो जाती है, यह प्रलय की पूर्णावस्था अर्थात् समाप्ति है। इस प्रकार सृष्टि-सर्जन, तथा प्रलय-आदि कारण में लीनता ब्रह्मा का प्रतिदिन का अर्थात् दिन और रात्रि का काम है। इस समुदाय अवधि में आठ अरब चौसठ करोड़ (8,64,00,00,000) सावन वर्ष बीत जाते हैं।

कल्प

कल्प दो भागों में विभक्त है अहः (दिन) तथा रात्रि। ये सावन अहोरात्र के भाग जैसे 30, 30 घटी के होते हैं वैसे ही कल्प में 1000-1000 युग होते हैं। 43,20,000×1000 = 4,32,00,00,000 (चार अरब बत्तीस करोड) वर्ष । यह कल्प है।

कल्प के दिन भाग में ब्रह्मा सृष्टि की रचना करते हैं। जब 1,70,640 वर्षों में सृष्टिरचना का कार्य पूर्ण हो जाता है, तब ब्रह्मा इस सृष्टि के संचालन के लिए अपनें द्वारा उत्पन्न मानस और शारीरक पुत्रों को इस व्यवस्था में लगाते हैं। चेतन प्रजा की सृष्टि की उत्तरोत्तर जन्मव्यवस्था में दक्ष प्रजापति को तथा अन्य समस्त व्यवस्थाओं के लिए मनु प्रजापति को नियुक्त करते हैं। यह 24 व्यवस्था दिनकल्प में ही आवश्यक हैं, अतः वे अपने दिन के मनु-प्रजापति सम्बन्धी काल को 14 भागों में विभक्त करते हैं, इसके लिए 14 मनु होते हैं।

एक मनु का कार्यकाल 71 युग होता है, इसमें (43,20,000×71 =) 30,67,20,000 (तीस करोड़ सडसढ लाख बीस हजार) सावन वर्ष होते हैं। यह 'प्राजापत्य' युग होता है। मनु 14 होते हैं, अतः कुल मनुओं का 'प्राजापत्य काल' 4,29,40,80,000 वर्षों का होता है, जो कल्प से (4320000000-4294080000=) 2,59,20,000 वर्ष (दो करोड़ उनसठ लाख बीस हजार वर्ष होता है। यह न्यूनता के तुल्य है। की समाप्ति पर प्रलय हो जाता है जो इतना ही बड़ा होता है, अतःआदि मन की व्यवस्था में भी एक सन्धि आवश्यक होती है। एक संधिकाल के 17,28,000 वर्ष हैं जो एक सत्य युग के तुल्य है। सन्धियों का ×15 = 25020,000 वर्षों का जो युग जितना हो जाता है। (वर्ष होते हैं जो सत्यपाद के तुल्य हैं क्योंकि इस सत्यब्रह्मा का काल होता है अतःसत्य का यह कालव्यवस्था होने से युग को सत्य नाम दिया गया है) प्राजापत्य युग एवं व्यवस्था में लगा सन्धिकाल मिलकर चौदह 'मन्वन्तर' कहलातेहैं। प्राजापत्य 4,29,40,80,000 + 2,59,20,000 सन्धिकाल ब्रह्मा के कल्प (4,32,00,00,000 वर्ष) की पूर्ति कर देते हैं।

अब हम ब्रह्मा, ब्रह्मा की आयु और ब्रह्मा के अहोरात्र को लेकर अब तक की सृष्टियों और प्रलयों को विहङ्ग दृष्टि से देखते हैं और इसमें नववर्ष प्रतिपदा पर एक दृष्टि डालते हैं।

हमारे वाङ्मय, विशेषतः सृष्टि विज्ञान के शास्त्र पुराण के अनुसार एक निश्चित प्रारूप प्राप्त करते हैं :–

अब तक छ (6) ब्रह्मा हो गए हैं। वर्तमान में सातवें ब्रह्मा चल रहे हैं। पराशक्ति नारायण के नाभि कमल से उत्पन्न होने से यह 'पद्मोद्भव' कहलाते हैं। अपने अहोरात्र के अनुसार ब्रह्मा की आयु सौ (100) वर्ष की होती है। एक ब्रह्मा की पूर्णता का यह काल 'महाप्रलय' कहलाता है। इसके अनुसार ब्रह्मा की अवधि को देखते हैं :

1. ब्रह्मा का अहोरात्र - हमारे सावन वर्षों के अनुसार 8,64,00,00,000 वर्षों का होता है

2. ब्रह्माब्द - ब्रह्मा का वर्ष- ब्रह्मा का अहोरात्र × 360 = 3110400000000 वर्ष

(इकतीस खरब दस अरब चालीस करोड़ वर्ष ।

3. ब्रह्मा की आयु - 100 वर्ष, 3110400000000 ु 100 = इकतीस नील दस खरब

छह बह्मा के इतने वर्ष निकलने पर वर्तमान ब्रह्मा का प्रादुर्भाव, उस संपूर्ण गणना का आधार ब्रह्मा का अहोरात्र है।

ब्रह्मा का एक नाम 'पर' है। उनकी आयु का अर्ध भाग इसीलिए परार्ध कहलाता है। वर्तमान ब्रह्मा की आयु का आधा भाग अर्थात् परार्ध जा चुका है। वर्तमान 'कल्प' अर्थात् ब्रह्मा का दिन ब्रह्मा के 51 वें वर्ष का प्रथम दिन है। इसका नाम श्वेत वाराह है। अब यदि हम अपने वर्तमान समय तक कल्प के सावन वर्षों की गणना करना चाहें तो सरलता से बता सकते हैं कि वर्तमान समय में कल्प के कितने वर्ष निकल चुके। हमारे पूर्वजों ने सर्वसाधारण के लिए भी इस को याद रखने का अत्यंत श्रेष्ठ सरल मार्ग हमें दिया है, वह है प्रत्येक कार्य में चाहे वह नित्य का होचा हे नैमित्तिक. विशेषनिमित्त से संबंधित, हो चाहेकाम्य -अपने चाहे गए उद्देश्य की पूर्ति के लिए किए जाने वाले कार्य को प्रारम्भ करने के लिए एक संकल्प बोलना है। यह एक दिन में न्यूनतम 5-6 बार बोला जाता है। इस संकल्प के कुछ भाग इस गणना के सूत्र हैं

1. ओमतत्सद् अद्य विष्णोः आज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणः -

आज विष्णु की आज्ञा से सृष्टिकर्म में लगे ब्रह्मा के

2. द्वितीये परार्धे, श्वेतवाराहकल्पे

दूसरे परार्ध के प्रथम दिन श्वेत वाराह कल्प में

3. सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे
   इस सातवें वैवस्वतमन्वन्तर में
4. अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे
   28 वें कलियुग में कलि के प्रारंभिक भाग में
5. पंचसप्तत्यधिकद्विसहस्रतमे विक्रमसम्वत्सरे
   2075 विक्रम सम्वत् में
   सावन अहोरात्र
   मास/माह (दो पक्ष)
   ऋतु (दो माह)
   अयन (तीन ऋत)
   वर्ष (दो अयन)
   युग (43,20,000 वर्ष)
   कल्प (1000 युग)
   ब्रह्मा का अहोरात्र (दो कल्प)

पीठाचार्य, वेदपुराणस्मृति शोधपीठ
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर